Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुवाद और रोजगार के अवसर

डॉ. अलकानिकम-वागदरे
सहयोगीप्राध्यापक, हिंदीविभाग
विलिंग्डनमहाविद्यालय, सांगली

अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जो परस्पर अपरिचित भाषाओं के संसार को एक -दूसरे के समीप लाता है। एक नई पहचान की सृष्टि करता है। इससे अपरिचित ज्ञान के विविध व्दार खुलते है। अनुवाद विभिन्न साहित्यों , संस्कृतियों, सभ्यताओं एवं राष्ट्रों के बीच भाषा संबंधी व्यवधान का समाधान कर उन्हें एक -दूसरे से मिलाने में सेतु का काम करता है। अनुवाद आज के युग की अनिवार्य आवश्यकता है। आधुनिक युग की कोई बात आज अनुवाद के प्रभाव से मुक्त नहीं है। भारत जैसे बहुभाषी तथा बहुधर्मीय देश में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए अनुवाद नितांत आवश्यक है।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूचि में भारत की कुल 22 राष्ट्रीय भाषाओं का उल्लेख है। हिंदी भी इनमें से एक भाषा है लेकिन अन्य भाषा की तुलना में हिंदी आगे निकल जाती है क्योंकि इसका फलक बहुत व्यापक है। इसे आँचलिकता या क्षेत्र विशेष की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। हिंदी का महत्व इसलिए नहीं है कि यह देश के बडे भूभाग पर बोली और समझी जाती है , बल्कि इसलिए है कि इसमें अन्य भाषाओं को अपने अंदर समाहित करने की उदारता है। विगत 75 वर्षों में हिंदी की विकास यात्रा पत्रकारिता, जनसंचार माध्यम, हिंदी सिनेमा के साथ चल रही है।

भारत बहुभाषी देश है। सारी भाषाओं को सीखना जन -सामान्य के बस की बात नहीं। राष्ट्रीय एकात्मता के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का जन -मानस के विचारों का आदान -प्रदान करना काल की आवश्यकता है। आज अनुवाद समय की माँग है। अनुवाद मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। अनुवाद की उपयोगिता केवल वैयक्तिक और सामाजिक स्तर पर नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर पर भी है। किसी भी भाषा में प्राप्त सामग्री का दूसरी भाषा में भाषांतरण अनुवाद है। "अनुवाद वह शक्तिशाली साधन है जो पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधता है। प्रत्येक देश और संस्कृति को दूसरे देश और संस्कृतियों को समझने -समझाने में सहायक होता है , और मानव ज्ञान और कला की उपलब्धियों से पूरी धरती को परिचित कराता है। "[1] आज अनुवाद दुनिया की अनिवार्यता है। अनुवाद के माध्यम से भाषाओं की दीवीरों को तोडा जा सकत है। 'वद' धातु में 'अनु' उपसर्ग जोडने से 'अनुवाद' शब्द बना है। अनुवाद में 'वद' का अर्थ है 'कथन' और 'अनु'का अर्थ है पीछे पुनः समान अथवा अनुरूप। अर्थात अनुवाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है - 'पुनः कथन अर्थात किसी के

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कहने के बाद कहना , समान कथन , समान रूप से कहना , अनुरूप कथन अर्थात किसी के कथन के अनुरूप कहना। '2

अनुवाद से हमें असंख्य लाभ है। अनुवाद का क्षेत्र भी असीम एवं अनंत है। जिसके जरिए अपरिचितों को परिचित बनाया जाता है। वैसे तो प्राचीन काल से अनुवाद का प्रचलन रहा है किन्तु बीसवीं शताब्दी में अनुवाद को जो महत्त्व प्राप्त हुआ , जीवन की आवश्य कथाओं के अनुरूप वह उससे पहले नहीं मिला था। इसी कारण इस सदी को 'अनुवाद युग' कहा गया है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच राजनीतिक , आर्थिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक, साहित्यिक, धर्म, दर्शन, कला, मनोरंजन और सांस्कृतिक स्तर पर बढते हुए आदान -प्रदान के कारण अनुवाद कार्य की अनिवार्यता और महत्ता को नई दिशा प्राप्त हुई है।

अनुवाद के क्षेत्र में इसी कारण रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त हुए है जैसे -

हिंदी अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार

↓

संसद

अनुवाद ब्युरो

कंपनी कार्यालय

फिल्म डबींग

पर्यटन स्थल

रक्षा मंत्रालय

रेल कार्यालय

कनिष्ठ अनुवादक

वरिष्ठ अनुवादक

अनुसंधान

राजदुतावास

साहित्यिक अनुवाद

बँक कार्यालय

रेडिओ

दूरदर्शन

विज्ञापन

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समाचार एजेन्सी

तकनीकी प्रौद्योगिकी कार्यालय

समाचार पत्र

द्विभाषी तत्काल भाषांतरकार

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद व्दारा रोजगार की व्यापक संभावनाएँ है।

वर्तमान युग संचार के विस्फोट का युग है। संचार सामूहिकता का आधार है। हिंदी को भूमंडलीय पहचान देने में जनसंचार की भूमिका अहम रही है। अनुवाद के क्षेत्र में जनसंचार क्षेत्र का बहुत बडा योगदान रहा है। संचार माध्यम को हम तीन विभागों में विभित कर सकते हैं जैसे

शब्दसंचार माध्यम अथवा मुद्रित माध्यम - इसमें विविध पत्र पत्रिकाएँ, समाचारपत्र, पुस्तके, पाम्पलेटस आदि को रखा जाता है।

श्रव्य संचार माध्यम में - रेडियो, आडियो, कॅसेटस्, टेपरिकार्डर, सी. डी. आदि।

दृक-श्रव्य माध्यम में - फिल्म, दूरदर्शन, वीडियो, कॅसेटस, विज्ञापन फिल्मस आदि में रोजगार उपलब्ध है।

अनुवाद का संसार अत्यंत विशाल है जिसमें एक साथ सैकडों भाषाओं और हजारों विषयों में ज्ञान का निरंतन आदान-प्रदान हो रहा है। विदेशी भाषा की पुस्तके हो या विदेशी फिल्मों का डबिंग का कार्य हो हर जगह अनुवादकों की आवश्यकता पडती है। दो भाषाओं पर अधिकार रखनेवाला व्यक्ति अनुवाद के क्षेत्र में अच्छा करिअर बना सकता है।

सरकारी क्षेत्र में केंद्र सरकार और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन के लिए केंद्र सरकार और विभिन्न मंत्रालयों के विभागों में अंग्रेजी हिंदी अनुवादकों की भारी माँग रहती है। संसद, राजदुतावास, रक्षा मंत्रालय, व्दिभाषी तत्काल भाषांतरकार , राजवास भारत सरकार का अनुसंधान विभाग जैसे कार्यालयों में हमेशा से अनुवादकों की माँग रहती है।

भारत का विदेशी कंपनियों के साथ कारोबार बढता जा रहा है। आज हिंदी की लोकप्रियता और भारत की आबादी देखकर कितनी ही कंपनियों ने अपने मानसकिता में बदलाव करते हुए अंग्रेजी की जगह हिंदी का उपयोग करना शुरू किया है। भूमंडलिकरण के तहत उन्होंने अपनी भाषा नीति में परिवर्तन कर दिया है। हिंदी भाषा की लोकप्रियता देखकर अंग्रजी के लोग हिंदी मीडिया की ओर आकर्षिक हो रहे है।

प्रसार माध्यमों में दृश्य, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य, प्रिंट मीडिया, समाचार पत्र, विविध प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ आदि और इस प्रकार की अनेक कार्यालयों में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। डॉ . हरिमोहन लिखते हैं - 'अनुवाद

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समाचार पत्रों तथा समाचार ऐजिसिंयों की मजबुरी है। स्थिति यह भी है कि हिंदी समाचार ऐजिन्सियों तथा समाचार पत्रों को कई बार अनुवाद का भी अनुवाद करना पडता है। तमिळ , तेलगू, बंगला, मराठी आदि भाषाओं से उठाई गयी समाचार सामग्री को पहले अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जाता है और फिर उस अनुवाद का पुनः हिंदी में अनुवाद किया जाता है। यह स्थिति उन भाषाओं की है यानी हिंदी और अनेक बीच में अंग्रेजी है इससे कई बार उस सामग्री के साथ न्याय नहीं हो पाता यह स्थिति सोचनिय है।'[3] इस प्रकार आज हर प्रसार माध्यम में अनुवादककों बडी माँग रही है।

अनुवाद की दिशा चहूँ ओर है , जिस तरफ दृष्टि डालो अनुवाद की व्यापकता , असीमित परिधि के विषय में हमें जो ज्ञान होने लगता है वह अनुवाद के कारण ही है। अनुवाद की व्यापकता के साथ उत्तरोत्तर अभिवृध्दि हो रही है और भविष्य अधिक सुदृढ हो रहा है। अनुवाद की गहन आवश्यकता को मापना अत्यंत कठिन और असाध्य कार्य है , जिस तरह विश्व को एकत्रित करने में अनुवाद ने अपनी भूमिका का निर्वाह किया है इस विषय में सोचकर हमें आश्चर्य होना स्वाभाविक है। ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद की गहन अवश्यकता है। संसार में असीम ज्ञान है और उस असीम ज्ञान को अर्जित करने के लिए जीवन सीमित है। यह भी एक और सत्य है कि संसार का सारा ज्ञान -विज्ञान एक भाषा में नहीं है वह तो सैकडों भाषाओं में फैला हुआ है। यह कहना असंगत नहीं होगा कि समय श्रम , धन एवं प्रतिभा की सीमाओं के कारण मनुष्य को संसार की सभी भाषाएँ सीखना असंभव है। जिज्ञासा मनुष्य का स्थायी भाव है। अनुवाद के माध्यम से ज्ञान - विज्ञान को समझने की नयी दिशा प्रदान करने में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

बँक, व्यवसायिक क्षेत्र, बीमा क्षेत्र, कंपनी कार्यालय, संसद, तकनीकी प्रौद्योगिकी कार्यालयों में अनुवाद का महत्त्व अनन्य साधारण है। आज अनुवाद के कारण ही लोगों का व्यापार विकसित हो रहा है। आर्थिक उदारीकरण भूमण्डलीकरण और विश्व बाजार के निर्माण के कारण अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद के माध्यम से अपने उत्पादों को खरीदा और बेचा जा रहा है।

अनुवाद के महत्वको स्पष्ट करते हुए प्रो. दिलीप सिंह और प्रो. ऋषभ देव शर्मा लिखते हैं - "व्यावसायिक जगत में भाषा के संदर्भ में जो कहावत प्रचलित है , वह यह है कि उपभोक्ता अपनी भाषा में खरीदता है , किन्तु व्यापारी ग्राहक की भाषा में ही बेचता है। Buy in your language but you sell in the language of your customers"[4]

बँक, बीमा क्षेत्र, रेल्वे अन्य कंपनी के कार्यालयों ने अपनी व्यवसाय नीतियों में परिवर्तन करके , अनुवाद का महत्त्व पहचानते हुए अपने कार्यालयों में अनुवादकों की नियुक्तियाँ की है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संचार के क्षेत्र में फिल्म जगत , विज्ञापन, शॉर्ट फिल्मस, रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र, इंटरनेट, मोबाइल, ई-पत्रिकाएँ, फेसबुक, व्हाट्सएप, टेलीग्राम, ई-मेल्स व्दारा विविध सूचनाओं का सम्प्रेषण प्रभावशाली ढंग से हो रहा है। इसे देखते कहा जा सकता है कि 'वसुधैव कुटुंबकम' की भारतीय संकल्पना को मुर्त रूप मिलने लगा है। विश्व के किसी भी कोने में घटनेवाली घटना की सूचना हमें अपनी भाषा में तुरंत मिल जाती है। इन सूचनाओं के सम्प्रेषण प्रक्रिया पर ध्यान देने से यह बात स्पष्ट हो जाता है कि इसके मुल में अनुवाद ही है जिसके कारण यह संभव हुआ।

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद यह तो अत्यंत व्यापक विषय रहा है कितनी की ऐसी कृतियाँ है जो विभिन्न भाषाओं की है जो अनुवाद के कारण हम पढ सके है। साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद के बल पर रोजगार अत्यंत व्यापक बन चुका है। अनुवादक को एक -एक शब्द और पन्ने के लिए मेहनताना मिलता है जो अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। कितनी ही अजरामर कृतियाँ है जिनके अनुवाद अत्यंत लोकप्रिय है।

रेडियो, दूरदर्शन, समाचार ऐजन्सी में वरिष्ठ और कनिष्ठ अनुवादक के पद होते है। वर्तमान में रेडियो पर प्रसारित मा. प्रधानमंत्री मोदी जी का कार्यक्रम 'मन की बात' भारत की क्षेत्रिय भाषाओं में अनुवादित करते हुए प्रसारित किया जाता है। आकाशवाणी अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है और सीधे 98 % लोकसंख्या से जुडता है।

अनुवाद में रोजगार के अनेक अवसर हमें प्राप्त है। अब तो अनुवाद के कई टूल्स , सॉफ्टवेअर, शब्दकोश इंटरनेट पर मौजूद है। डबिंग के क्षेत्र में फिल्मस , शॉर्ट फिल्मस , विज्ञापन के क्षेत्र टेलीविजन के कार्यक्रम , आकाशवाणी के कार्यक्रम आदि में रोजगार की अनेक संधियाँ आज उपलब्ध है। अनुवाद की सहायता से आज भाषायी दीवार गिराने में हमें निश्चित रूप से सफलता हासिल हुई है।

पूरे विश्व में पर्यटन एक उद्योग के रूप में पहचान बना रहा है। प्रत्येक राष्ट्र अपने -अपने देश के पर्यटन व्यवसाय को बढावा दे रहा है जिससे विदेशी मुद्रा का आदान-प्रदान होता हैं और राष्ट्र के लिए वह फायदे मंद होता है।

पर्यटन के क्षेत्र को लोगों ने व्यवसाय के रूप में स्वीकार किया है। बेहतर गाइड बनना यह भी एक उत्तम रोजगार का साधन बन चुका है। अनुवाद के माध्यम से पर्यटन स्थल की जानकारी देना , वहाँ की विशेषताएँ बताना संभाषण एवं सम्प्रेषण करना एक चुनौतिपूर्ण व्यवसाय बन गया है। विविध पर्यटन कंपनियाँ अपने कंपनियों में अनुवादक की नियुक्तियाँ करते है जिससे पर्यटक को सुविधा हो। आज यह व्यवसाय देश-विदेश में अत्यंत बडे पैमाने पर हो रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की अनेक संधियाँ उपलब्ध है क्षेत्रिय भाषा से हिंदी में हिंदी भाषा से क्षेत्रिय भाषा में , अंतरराष्ट्रीय भाषा से क्षेत्रिय और हिंदी में कितने सारे पर्याय इसमें उपलब्ध है। इससे देश -विदेश का साहित्य , उनकी

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अलग अलग पद्धतियाँ, रीति रिवाज को हम जान -पहचान सकते है। शिक्षा और खासकर विज्ञान के क्षेत्र में अनुवादक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

निष्कर्ष :-

बीसवी शताब्दी में अनुवाद को जो महत्व प्राप्त हुआ वह उससे पहले कभी नहीं मिला था इसी कारण 'बीसवी सदी को अनुवाद का युग' कहा जाता है। अनुवाद के माध्यम से विश्व की अनेक बातों को हम जान सके है और जानते रहे है। प्राचीन काल से वर्तमान काल तक अनुवाद की आवश्यकता , महत्ता, उपादेयता निरंतर बनी हुई है। अनुवादक की भूमि अत्यन्त व्यापक और परिधि असीमित है। कई प्रकार के क्षेत्रों के अनुवाद को आधार बनाकर कार्य किया जा रहा है। धर्म-दर्शन, व्यापार, वाणिज्य, पर्यटन, भाषा, साहित्य, राजनीति, शासन-प्रशासन, खेल, जनसंचार सभा क्षेत्रों में अनुवादक को रोजगार की असीम संधियाँ उपलब्ध है। आज अनुवाद केवल शिक्षा का माध्यम न बनकर रोजगार के नये - नये क्षेत्रों को उद्घाटित कर रहा है। सोशल मीडिया हो या जनसंचार के माध्यम हो अनुवादक की महत्ता और उपादेयता निश्चित बनी हुई है।

संदर्भ

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी - अनुवाद कला पृ. 9 शब्दकार प्रका. दिल्ली प्र. सं. 1988
2. डॉ. अर्जुन चव्हाण - अनुवाद चिंतन पृ. 38 अमन प्रका. कानपुर प्र. सं. 1998
3. डॉ. हरिमोहन - अनुवाद विज्ञान और सम्प्रेषण - आर. के. बुक्स द्वितीय संस्करण 2006 पृ. 105
4. संपा. - गोपाल शर्मा अनुवाद का सामयिक परिप्रेक्ष्य पृ. 40